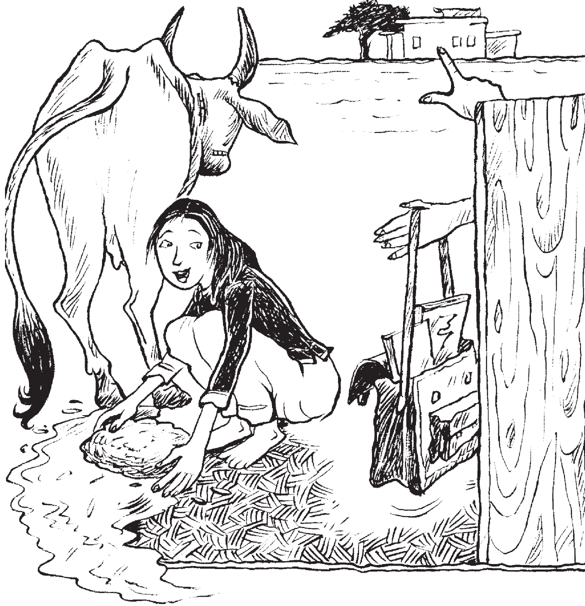
अच्छी शिक्षा की कुछ शर्तें

ऋचा गोस्वामी

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समकालीन शैक्षिक संवाद का सबसे अहम मुद्दा है। हर स्तर पर होने वाली बातचीत इसके इर्द–गिर्द घूम रही है। कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि शैक्षिक संवाद में गुणवत्ता की चर्चा हाल ही में शामिल हुई है। इसका एक कारण जो समझ आता है, वह है शिक्षा का विस्तार। जैसे–जैसे हमने शिक्षा को ज्यादा बच्चों तक पहुंचाने का काम किया, वैसे–वैसे गुणवत्ता पर सवाल खड़े होने लगे। इसका मतलब यह कतई नहीं है कि जब ये सवाल उठ नहीं रहे थे, तब सब ठीक था। दरअसल, आज के संदर्भ में दो मुख्य सवाल हैं। एक तो शिक्षा के विस्तार के साथ–साथ उसमें विषमताएं और बड़े स्तर पर दिखने लगीं और दूसरा, गुणवत्ता का सवाल ज्यादा अहम हो गया।



विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केंद्र पिछले पांच सालों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अपनी समझ के आधार पर उदयपुर शहर की कच्ची बस्तियों के स्कूलों में काम कर रहा है। इस समझ को समेकित करने का प्रयास इस लेख में किया गया है।

शिक्षा समाजीकरण की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इस नाते यह हमें काफी हद तक समाज में स्थापित वैयक्तिक और सामूहिक भूमिकाओं के लिए तैयार करती है। यह प्रचलित भूमिकाएं आमतौर पर समाज में पहले से बनी हुई असमानताओं लिंग और जाति पर आधारित होती है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए अच्छी शिक्षा की पहली शर्त जिस पर चर्चा की जानी चाहिए वो है– समता। अलग–अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को बराबरी के शैक्षिक अवसर मिलने चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं है। पर यदि हम शिक्षा को समाज में समानता बनाने वाली एक ताकत के रूप में देखें तो मात्र बराबर अवसर देना काफी नहीं है। कृष्ण कुमार इस मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए लड़कियों की शिक्षा का उदाहरण लेते हैं। लड़कियां आज भी भेदभाव और बंदिशों का सामना करती हैं। समान अवसरों के अलावा स्कूल को लड़कियों को बराबरी पर लाने के लिए ज्यादा

प्रोत्साहन, सहारा और आगे बढ़ने के अवसर देने पड़ेंगे। चूंकि स्कूल की जिम्मेदारी यह भी है कि बच्चियों को उनके घर–परिवेश के नकारात्मक अनुभवों से उबारा भी जाए।

अच्छी शिक्षा की दूसरी शर्त होनी चाहिए– स्वावलंबी बनने की तैयारी। यह तो मानी हुई बात है कि शिक्षा वयस्क भूमिका की तैयारी है पर इसका सीमित रूप हमें आज की शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्यों में नजर आता है। शिक्षा ऐसी हो जो नौकरी पाने में मदद करें। यह कोई गलत उद्देश्य नहीं है पर संकीर्ण अवश्य है। स्वावलंबी बनने के लिए हमें नौकरी के अलावा अपने बहुत से काम खुद करने के कौशल और इच्छा शक्ति दोनों चाहिए। स्कूलों में हाथ से काम करने का प्रशिक्षण नगण्य है।

इससे जुड़ी हुई बात है स्वयं काम करने के मौके। स्कूलों में बच्चों के प्रति अविश्वास इस हद तक है कि हम उन्हें खुला छोड़ने से डरते हैं। खुद से कुछ करने की तो बात ही अलग है। अनगिनत ऐसे मौके हम रोज गंवाते हैं। खुद प्रश्नों के उत्तर लिखना, कक्षा का बोर्ड सजाना, क्रियात्मक लेखन, प्रार्थना सभा की प्रस्तुति, अपनी पढ़ी हुई किताबों का ब्यौरा रखना आदि। बच्चों को जिम्मेदारी के लिए तैयार करने के दो ही तरीके हैं– उन्हें जिम्मेदारी सौंपना और कक्षा में खुली चर्चा का माहौल बनाना। साथियों और शिक्षकों से काम की योजना पर, आने वाली समस्याओं पर, एक दूसरे से हुई गलतियों पर खुली चर्चा कर पाना इन कार्यों को सीखने के अवसरों में तब्दील कर देगा।

तीसरी, अच्छी शिक्षा की शर्त है– तार्किक समझ का विकास। हर विषय का संचित ज्ञान अथाह है, किसी भी उम्र में किस तरह का कितना ज्ञान देना उचित है, एक राजनैतिक और कुछ हद तक शिक्षाविदों के मनमानेपन का परिणाम है। पर हर विषय की पढ़ाई से एक समान अपेक्षा तो है ही कि वह बच्चों को दुनिया में यथास्थिति लेने के बजाए उस पर सवाल उठाने और भिन्न संभावनाएं ढूंढ़ने के लिए प्रेरित करे। यानि अच्छी शिक्षा के उद्देश्यों में बच्चों में सवाल उठाने और नए उत्तर ढूंढ़ने की क्षमता शामिल होनी चाहिए।

एक आखिरी शर्त, जिस पर हम बात करेंगे वह है शिक्षकों की आजादी। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें हर कक्षा की स्थिति, हर बच्चे की परिस्थिति, सीखने का तरीका, शिक्षक का नजरिया और उसकी क्षमताएं आदि बहुत से पहलुओं की अंतःक्रिया होती है। इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए सीखने का माहौल बनाने की जिम्मेदारी एक शिक्षक की है। स्कूल के प्रबंधक या सरकारी अफसर इसमें मदद कर सकते हैं पर नियंत्रित नहीं कर सकते। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया बच्चों के लिए उपयुक्त हो, यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक, सी.सी.ई. आदि के जाल में बांधा न जाए बल्कि इन्हें सहयोग का तरीका समझा जाए।

कुल मिलाकर अच्छी शिक्षा की चार शर्तों पर इस लेख में बात की गई है। पहली, शिक्षा समतावादी होनी चाहिए। इसके लिए केवल बराबरी के अवसर देना काफी नहीं है, स्कूल में ऐसा माहौल बनाने की ज़रूरत है। विभिन्न और गैर बराबरी के परिवेश से आने वाले बच्चों को हम जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बराबर ला सकें। दूसरी, शिक्षा स्वावलंबी वयस्क बनने में मदद करे। तीसरी, शिक्षा बच्चों में तार्किक सोच और सवाल खड़े करने की क्षमता बनाए और चौथी, शिक्षकों पर भरोसा और उनकी आजादी।

ऋचा गोस्वामी : विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केंद्र में कार्यरत हैं।